रविवार, ६ सितम्बर, २०२०

आत्मीय पाठकगण,

नमस्ते।

कल आपको रोहिणी मेनन से बढ़िया-सा व जानकारीयुक्त पत्र प्राप्त हुआ जो कि 'मन्दिर में रहो' सत्संगों की प्रबन्ध निदेशक थीं। और अब, वह पत्र प्राप्त करने के बाद, आप सोच रहे होंगे कि मैं, स्वामी अखण्डानन्द, जो सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर होने वाले सीधे वीडिओ प्रसारणों का *नव-नियुक्त* प्रबन्ध निदेशक हूँ, आपको क्या बताने वाला हूँ।

मुझे आशा है कि अपने इस परिचय द्वारा आपके चेहरे पर मुस्कान लाने में मैं सफल रहा हूँ। मैं आपको बताना चाहूँगा कि *आपके चेहरे पर मुस्कान लाना* इन शब्दों का प्रयोग मैं क्यों कर रहा हूँ। अपनी किशोरावस्था में जब मुझे बाबा मुक्तानन्द से शक्तिपात प्राप्त हुआ, तब से मैं मुस्कराता ही रहा हूँ। और मैं जानता हूँ कि आपमें से अनेक, अनेक, *अनेकानेक* लोगों को भी हमारे सिद्धयोग के गुरुओं से शक्तिपात प्राप्त हुआ है, और मैं अकसर सोचता हूँ कि कैसे आपकी सुन्दर और जोश से भरी मुस्कानें विश्व में प्रकाश फैला रही हैं।

मुस्कानों की बात करें तो—आपमें से कुछ लोगों ने श्रीगुरुमाई की कविताओं की पुस्तक 'अन्तर्धारणा' पढ़ी होगी या स्वयं गुरुमाई जी के स्वर में इन कविताओं की ऑडिओ रिकॉर्डिंग सुनी होगी। *['अन्तर्धारणा' पुस्तक के अंग्रेज़ी संस्करण का नाम है, Smile, Smile, Smile; और अंग्रेज़ी भाषा के शब्द Smile 'स्माइल' का अर्थ है, मुस्कान या मुस्कराओ।]* मेरा यह प्रबल सुझाव है कि अनिश्चितता के इस समय में आप फिर एक बार इनमें निहित प्रज्ञान का अध्ययन करें। इस बात की पुनः खोज करें कि कैसे ये कविताएँ आपको अपने हृदय की ओर आकृष्ट करती हैं और जीवन के प्रति आपके दृष्टिकोण को और भी अधिक आलोकित करती हैं।

प्रबन्ध निदेशक की अपनी भूमिका में मैं हर सप्ताह, आपको उस सप्ताह होने वाले सीधे वीडिओ प्रसारण का विषय बताऊँगा, इन प्रसारणों में भाग लेने हेतु आप सादर आमन्त्रित हैं। ये सीधे वीडिओ प्रसारण शैक्षणिक स्वरूप के होंगे—ये अध्ययन-सत्र होंगे। और आपको यह बताना मेरे लिए अत्यन्त सम्मान की बात है कि श्रीगुरुमाई ने एक शीर्षक प्रदान किया है जिससे हम सबको और भी अधिक अध्ययन करने की प्रेरणा मिलेगी। यह शीर्षक है :

स्वाध्याय

आप साप्ताहिक अध्ययन-सत्रों में "स्वाध्याय" शीर्षक के अर्थ के बारे में और अधिक जानेंगे।

एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन द्वारा "स्वाध्याय" शीर्षक का पहला अध्ययन-सत्र, सिद्धयोग वैश्विक हॉल में सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा शनिवार, १२ सितम्बर को आयोजित होगा। अगले पत्र में मैं आपको इस अध्ययन-सत्र की अधिक जानकारी दूँगा व इसके समय के विषय में भी बताऊँगा।

आप सभी इस बारे में भली-भाँति जागरूक हैं कि आप इस महामारी के दौरान 'सुरक्षित रहें' इस दो शब्दों वाले वाक्यांश का पालन करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। 'सुरक्षित रहें', यह वाक्यांश २०२० के पूरे वर्ष के दौरान अनेक सरकारों का अपने नागरिकों के लिए आदेश रहा है। और इन दो शब्दों से विभिन्न भावनाएँ व प्रतिक्रियाएँ उभरी हैं; लोग अब घर पर हैं, एक-दूसरे से भौतिक रूप से दूरी बनाए रख रहे हैं, उनके पास काम नहीं है [जिसने उनके जीविका को प्रभावित किया है], बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं, आदि, इत्यादि—इन सब बातों को लेकर पसन्दगी-नापसन्दगी की मिश्रित भावनाएँ लोगों में उभर रही हैं। सरकारी आदेशों और सुरक्षा व्यवस्थाओं के जवाब में, बहुत बड़ी संख्या में लोगों का जीवन उलट-पलट हो गया है। कुछ लोग इस समय से भली-भाँति गुज़र पाए, और यहाँ तक कि इस समय का सदुपयोग कर इसे फलदायी भी बना सके; तथापि हर किसी के पास वे संसाधन नहीं थे जिससे कि वे उन चुनौतियों को पार कर सकें जो मानो अनपेक्षित रूप से उनके सामने आईं।

ऐसी परिस्थितियाँ हमारे सामने हों तो सिद्धयोग पथ के विद्यार्थी होने के नाते ***हम*** क्या करें?

वर्तमान परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी उग्र हों, हमारे जीवन पर इस महामारी की पकड़ चाहे कितनी भी ज़बरदस्त क्यों न रही हो, हमें श्रीगुरुमाई की इस सिखावनी को पुनः याद करना होगा : "हर परिस्थिति का अच्छे से अच्छा उपयोग करो।" इसी वर्ष गुरुमाई जी ने कहा है कि हम 'सुरक्षित रहें' इन दो शब्दों को अपना सर्वप्रिय अभिकथन बना सकते हैं। अपने मन में "सुरक्षित रहें" यह विचार रखकर व इसे एक-दूसरे से कहकर आप दृढ़तापूर्वक इस बात की पुष्टि करते हैं कि आपका जीवन—और दूसरों का जीवन भी—सुरक्षा के आशीर्वाद से सम्पन्न है। सभी के जीवन में आप सुरक्षा, सलामती और आश्रय को आमन्त्रित करते हैं।

आप सभी लोग, सुरक्षित रहें!

मैं एक श्लेषोक्ति [दो अर्थों वाली बात] के साथ समापन करना चाहूँगा जिससे आपके चेहरे की मुस्कान और भी जगमगा उठे :

एक विचारणीय प्रश्न : अंग्रेज़ी भाषा में सबसे लम्बा शब्द कौन-सा है?

इसका उत्तर है : *smiles.* क्योंकि इस शब्द के पहले व आख़िरी अक्षर के बीच एक *mile* है!
[अंगेज़ी शब्द mile का अर्थ है, मील]

आदर सहित,
स्वामी अखण्डानन्द
अध्ययन-सत्रों के प्रबन्ध निदेशक
एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।